"मेरी थाई यात्रा"

डॉ. चेतना उपाध्याय*

वैश्विक साहित्यक एवं सांस्कृतिक संस्था छत्तीसगढ़ मित्र रायपुर द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सा.सा. सम्मेलन में वार्ता हेतु आमंत्रण प्राप्त हुआ। एक स्वभाविक खुशी जेहन में स्वतः ही स्फूर्त हो गई। कार्यक्रम 2 से 7 जून, 2017 में क्राबी महोत्सव के रूप में थाईलैण्ड में था। विषय भी रूचिकर और जगह भी विश्व के मानचित्र पर विशिष्ट पहचान रखने वाली। अहा मजा आ गया। पतिदेव को पूछा तो वे भी तुरंत तैयार हो गये। इसे कहते हैं सोने पे सुहागा। मन खुशी से झूम उठा। हाथों ने कागज कलम उठा उक्त विषय पर अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी।

इस यात्रा का प्रारम्भ अजमेर से राजधानी ट्रेन द्वारा राजधानी दिल्ली को हुआ। वहाँ से मेट्रो द्वारा हम इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पहुंचे जहां से चैक-इन की अनिवार्यताएं पूरी कर हमने थाई एयरवेज द्वारा बैंकॉक को उड़ान भरी। धीरे-धीरे ऊपर उठते हुए विमान के साथ स्वयं भी बादलों का सीना चीर उन्हें धरती के पास नीचे छोड़ ऊपर उड़ना एक गुदगुदी भरी सिहरन सी पैदा कर रहा था। बचपन में धरती से जब आकाश को देखती थी तब लगता था हमें बड़े होकर आकाश को छूना है। बादलों के बीच अठखेलियाँ करने को पहुंचना है। पता ही न था तब कि बादल इतने करीब हैं हमारे। बादलों से इतनी करीबी तो कभी महसूस ही नहीं हुई। अरे नहीं नहीं ! कुछ समय पूर्व मेघालय असम गए थे तब भी वहाँ प्रकृति का यह खूबसूरत नजारा देखने को मिला था। वहाँ भी बादलों को पैरों की तरफ से उमड़ते घुमड़ते देखा था मगर उसे मैने दृष्टिभ्रम के रूप में स्वीकार किया था, कि अनायास ही खामोशी फिल्म के गीत की पंक्तियाँ याद आ कर रोमांचित कर गई- आज मैं ऊपर आस्मां नीचे, कुछ ही समय में अनाउंसमेंट हुई कमर बेल्ट को ठीक से बाँध कर सीधे बैठिए। हम सुवर्ण भूमि एयरपोर्ट बैंकॉक पहुंचने वाले हैं।

बेहद खूबसूरत, सुव्यवस्थित, विशालकाय एयरपोर्ट को देखते ही आंखें कुछ चुंधिया सी गई। वहां पता चला कि यह विश्व में दूसरे सबसे बड़े एयरपोर्ट में स्थान रखता है। फिर उसके नाम सुवर्ण भूमि में भी कुछ अपनत्व का आभास मिला हम तो अपनी हिन्दुस्तानी धरा को सुवर्णभूमि मानते हैं। इतने में ही बड़े सुंदर दृश्य पर नजर पड़ी वह समुद्र मंथन का दृश्य था, बड़ा सा कलश जिस पर नागराज लिपटे हुए, नाग को एक सिरे पर देव, दूजे पर दानव पकड़कर समुद्र मंथन करते हुए। कलश के ऊपर त्रिदेव का आभास हुआ। नयनाभिराम दृश्य जिसके बारे में दादी-नानी से सुना भर था। विहंगम दृश्य यहाँ विदेशी (थाई) धरा पर देखने को मिला। फिर तो इस धरा को करीब से जानने का कौतुहल जाग गया। क्योंकि यहाँ हिंदुस्तान में पौराणिक कथाओं में इसका जिक्र कुछ इस प्रकार है कि देवों और असुरों ने एक बार अमृत प्राप्ति हेतु समुद्र मंथन किया था। इसके लिए रस्सी के रूप में वासुकि नाग, मथानी के लिए सुमेरू पर्वत का प्रयोग किया था। नाग के फन

* वरिष्ठ व्याख्याता डाइट
जिला शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, मासूदा (अजमेर)।

ISSN 2581-9917

की तरफ असुर और पूँछ की तरफ देवता थे। मथानी को स्थिर रखने के लिये कच्छप के रूप में विष्णु थे। और यह ज्यों का त्यों दृश्य यहाँ विदेशी धरा (थाईलैण्ड) पर दृष्टिगोचर हुआ।

हिन्दुस्तान में दादी जी से रामायण कथा सुनी थी जिसमें राजा रामचन्द्र जी के दो पुत्र लव और कुश हुए थे, जिन्होंने अश्वमेघ यज्ञ किया था। आश्रम में जन्म व पालन पोषण होने के कारण वे अपने पिता श्री रामचन्द्र जी से इस दौरान ही मिले थे। ...फिर आगे या तो उन्होंने कहा नहीं अथवा हमने सुना/पढ़ा नहीं। खैर, हकीकत जो कुछ भी हो। यहाँ इस विशिष्ट स्वर्णभूमि पर जो कुछ भी जाना व रोमांचित कर देने वाला था। अतः वह जानकारी आप से भी बांट रही हूं।

यहाँ थाईलैण्ड में आज भी संवैधानिक रूप में रामराज्य है। कारण कि श्री रामचन्द्र जी के बड़े पुत्र कुश के वंशज सम्राट ''भूमिबल अतुल्य तेज'' जिन्हें नौवां राम कहा जाता है के पुत्र राज कर रहे हैं। भूमिबल अतुल्य तेज का 13 अक्टूबर 2016 को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। फिर आपके पुत्र श्री ''वजीरालौंगकोर्न'' 16 अक्टूबर 2016 को 64 वर्ष की आयु में थाईलैण्ड के राजा बने। लेकिन राजगद्दी पर अपने पिता के निधन के 50 दिवसीय शोक के पश्चात् दिसम्बर 01, 2016 को आसीन हुए इन्हें राम दशम की उपाधि से अलंकृत किया गया अर्थात् यहाँ हकीकत में रामराज्य है।

अलंकरण के दौरान बताया गया कि आपको ''महामहीम राजा महा वजीरालोंगकोर्न बोडिन्द्रदेव यव रंगकुन'' के रूप में अधिकारिक तौर पर जाना जाएगा। जन्म के समय इनका पहला नाम था ''वजीरालोंगकोर्न बोरोममचक क्रयादिसवसंतत्तीओंक ठेवेत्थमरोंगसुबोरीबा आफिक्हनपरकणमहित्तलडूंलादेत पहुमी पहानेनरेतवारांगकुनकित्तीसिरिसोमबूनसवंग कहावत बोरोममखत्तियरतचकमण। इसे समझने हेतु यहाँ जरूरी है कि हम भगवान श्री राम का संक्षिप्त इतिहास एक नजर में देखने भर का प्रयास मात्र करें।''

वाल्मिकी रामायण एक धार्मिक ग्रन्थ होने के साथ एक ऐतिहासिक ग्रन्थ भी है। क्योंकि महर्षि वाल्मिकी राम के समकालीन थे। रामायण के बालकाण्ड के सर्ग 70, 71, व 73 में राम और उनके तीनों भाईयों के विवाह का वर्णन है। जिसका सारांश है-मिथिला के राजा सीरध्वज थे, जिन्हें लोग विदेह भी कहते थे। उनकी पत्नी का नाम सुनेत्रा (सुनयना) था जिनकी पुत्री सीता जी थी जिनकी विवाह राम से हुआ था। राजा जनक के कुशध्वज नाम के भाई थे। इनकी राजधानी सांकाश्य नगर थी जो इक्षुमति नदी के किनारे थी। इन्होंने अपनी बेटी उर्मिला लक्ष्मण से, मांडवी भरत से और श्रुतिकीर्ति का विवाह शत्रुघ्न से करवाया था।

केशवदास रचित 'रामचन्द्रिका' पृष्ठ 354 (प्रकाशन संवत 1715) के अनुसार राम और सीता के पुत्र लव और कुश, लक्ष्मण और उर्मिला के पुत्र अंगद और चन्द्रकेतु, भरत और मांडवी के पुत्र पुष्कर और तक्ष, शत्रुघ्न और श्रुतिकीर्ति के पुत्र सुबाहु और शत्रुघात हुए थे। भगवान राम के समय ही राज्यों का बंटवारा इस प्रकार हुआ थाः

पश्चिम में लव को लवपुर (लाहौर) पूर्व में कुश को कुशावती, तक्ष को तक्षशिला, अंगद को अंगद नगर, चन्द्रकेतु को चन्द्रावति।

कुश ने अपना राज्य पूर्व की तरफ फैलाया आप हिन्दू धर्म को मानते हुए भी बौद्ध अनुयायी रहे। आपने वहीं नागवंशी कन्या से विवाह किया था। थाईलैण्ड के राजा उसी कुश के वंशज हैं। इस वंश को चक्री वंश कहा जाता है। चूंकि राम को विष्णु का अवतार माना जाता है, और भगवान विष्णु की आयुध चक्र है इसीलिए थाईलैण्ड के लोग चक्री वंश के हर राजा को ''राम'' की उपाधि देकर नाम के साथ संख्या दे देते हैं। जैसे यहां 2017 में दशम राजा राम का राज्य है। वर्तमान में लोग थाईलैण्ड की अयोध्या (राजधानी) को बैंकॉक (ठंदहावा) कहते हैं, क्योंकि इसका सरकारी नाम इतना बड़ा है कि इसे विश्व का सबसे बड़ा नाम माना जाता है। इसका नाम पाली व संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है। देवनागरीलिपि में पूरा नाम इस प्रकार है- ''क्रूंगदेव महानगर अमर रत्न कोसिन्द्र महन्द्रियुध्या महातिलक भव नवरत्न रजधानी पुरी रम्य उत्तम राज निवेशनमहास्थान अमर विमावन अवतावर स्थित शक्रदत्तिय विष्णु कर्म प्रसिद्धि।''

थाई भाषा में इस पूरे नाम में कुल 163 अक्षरों का प्रयोग किया गया है। इस नाम की एक और विशेषता है। इसे बोला नहीं गा कर कहा जाता है। कुछ लोग आसानी के लिए इसे ''महेन्द्र अयोध्या'' भी कहते हैं। अर्थात् इन्द्र द्वारा निर्मित महान अयोध्या। थाईलैण्ड के जितने भी ''राजा'' राम हुए हैं सभी इसी अयोध्या में रहते आए हैं। वास्तव में देखा जाए तो असली राम राज्य थाईलैण्ड में ही है। बौद्ध अनुयायी होने के बावजूद थाईलैण्ड के लोग अपने राजा को राम का वंशज होने से विष्णु का अवतार मानते हैं। यहाँ के राजा प्रभु श्री राम का वंशज होने से यहाँ का राज्य राम राज्य कहलाता है। थाईलैण्ड में संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना 1932 में हुई।

भगवान राम के वंशजों की यह स्थिति है कि उन्हें निजी अथवा सार्वजनिक तौर पर कभी भी विवाद या आलोचना के घेरे में नहीं लाया जा सकता है। वे पूजनीय है। थाई शाही परिवार के सदस्यों के सम्मुख थाई जनता उनके सम्मानार्थ सीधे खड़ी नहीं हो सकती है बल्कि उन्हें झुक कर खड़े होना पड़ता है। उनकी तीन पुत्रियों में से एक हिन्दू धर्म की मर्मज्ञ मानी जाती है।

 ISSN 2581-9917

रामायण थाईलैण्ड के राष्ट्रीय ग्रन्थ के रूप में स्वीकृत है। यद्यपि थाईलैण्ड में थेरावाद बौद्ध धर्म के अनुयायी बहुसंख्यक है। इसके बावजूद भी रामायण को राष्ट्रीय ग्रन्थ रूप में मान्यता प्राप्त है। इसे थाई भाषा में राम कियेन कहते हैं। इसका अर्थ रामकीर्ति होता है जो वाल्मिकी रामायण पर आधारित है। इस ग्रन्थ की मूल प्रति सन् 1767 में नष्ट हो गई थी, जिससे चक्री राजा प्रथम राम (1736/1809) ने अपनी स्मरण शक्ति से पुनः लिखा था। थाईलैण्ड में रामायण को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करना इसलिए संभव हुआ कि यहां हिन्दु धर्म मान्य है। थाईलैण्ड में राम कियेन पर आधारित नाटक और कठपुतलियों का प्रदर्शन देखना धार्मिक कार्य माना जाता है। राम कियेन के मुख्य पात्रों के नाम इस प्रकार हैं।

राम (राम), फ्रलक (लक्ष्मण), पाली (बाली) सुक्रीप (सुग्रीव), ओन्कोट (अंगद), खोम्पून (जाम्बवन्त), बिपेक (विभीषण), तोतस कन (दशकण्ठरावण), सदायु (जटायु), सुपन मच्छा (शूर्पणखा), मारित (मारीच), इन्द्रचित (इन्द्रजीत, मेघनाद), फ्ररा पाई (वायुदेव) इत्यादि। थाई राम कियेन में हनुमान की पुत्री और विभीषण की पत्नी का नाम भी है जो यहां के लोगों से बातचीत करने पर पता नहीं चल पाया।

हालांकि यहां बौद्ध धर्मावलम्बी बहुसंख्यक हैं व हिन्दु अल्पसंख्यक, उसके बावजूद भी यहां चहुं ओर साम्प्रदायिक सद्भाव के ही दर्शन होते हैं। यहां बौद्ध भी कुछ हिन्दू देवताओं को मानते व पूजते हैं। नामों से भाषाई अंतर अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है वह इस प्रकार है।

राईसुअन ईश्वन (ईश्वर शिव), रनाराइ (नारायण) राराम (विष्णु), ब्रह्म (ब्रह्मा), राइन (इन्द्र) राआथित् (आदित्य/सूर्य), वाईपाय (पवन/वायु)। यहां मान्यताओं में भी कोई विशेष पृथकता दृष्टिगोचर नहीं हुई।

यहां थाई संसद के सामने गरूड़ बना हुआ है, वही गरूड़ पक्षी जो कि भारतीय पौराणिक ग्रन्थों में भगवान विष्णु का वाहन माना गया है। चूंकि राम विष्णु के अवतार हैं और थाईलैण्ड के राजा राम के वंशज हैं और बौद्ध अनुयाई होने पर भी हिन्दु धर्म पर अटूट आस्था रखते हैं। अतः यहां गरूड़ को राष्ट्रीय चिन्ह घोषित किया हुआ है। इस तरह हमने पाया कि यहां की धार्मिक मान्यताओं में भी काफी कुछ साम्य है। यहां हम भ्रमण के दौरान जिस जिस भी होटल में ठहरे वहां सभी जगह हमने पाया कि यहां छोटा सा मंदिर होटल की परिसीमा में बना हुआ है, जहां ईश्वर के प्रति आस्था का प्रतीक दीपक/अगरबत्ती मौजूद होती थी, साथ ही प्रसाद स्वरूप उस होटल में सवेरे जो कुछ भी भोजन बना होता है उसका वहां भोग लगा हुआ देखा। बड़ा आश्चर्य भी हुआ कि हिन्दुस्तान के होटलों में हमसे इस परम्परा का निर्वहन नहीं हो पाया। या हो सकता है हम यहां जिस जिस होटल में ठहरे हों वहां यह व्यवस्था न हो। क्योंकि हिन्दु परम्परा में ईश्वर को प्रथम भोग हृदयतल की गहराईयों से स्वीकारा ही जाता है। पर हां यह सच है कि थाई धरती पर इस परम्परा के निर्वहन को देखकर आत्मीय प्रसन्नता का आभास हुआ।

यहां के अभिवादन प्रारूप में बड़ा साम्य लगा। आगंतुक के मिलने पर यहां भी ठीक तवादिकोप (नमस्कार) कहने की परम्परा है। यहां संवैधानिक राजतंत्र है और यहां लोग भगवान स्वरूप में ही अपने राजा रानी को पूजते हैं। कारण कि यहां भगवान श्रीराम के वंशजों का ही साम्राज्य रहता आया है। अतः वे सभी ईशतुल्य रूप में ही यहां कि जनता को स्वीकार्य है। यहां कई जगहों पर वर्तमान राजा (श्रीराम) की तस्वीरें सम्मानजनक रूप में लगी हुई दिखाई दी। हर जगह पुष्प हार व धूप/अगरबत्ती को ईश अराधना के रूप में पाया। जिसने हिन्दुवाद होने का संकेत दिया।

थाईलैण्ड को पहले सियाम देश के नाम से जाना जाता था। इस देश पर कभी किसी का कब्जा नहीं रहा। स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में आज भी इसकी पहचान कायम है। हो सकता है यही कारण हो कि यहां श्रीराम का वर्चस्व चिरकाल से निरंतर बना रहा। हिंदुस्तान को तो अंग्रेजों की गुलामी का दंश लम्बे समय तक झेलना पड़ा है। अतः स्वाभाविक रूप में यहां की कुछ परम्पराओं का लोप व कुछ परम्पराओं में परिवर्तन, कहीं विकासवादी परिवर्तन, दृष्टिगोचर होता है। थाईलैण्ड पुरातन काल से ही स्वतन्त्र राष्ट्र रहा है। यही कारण है कि यहां परम्पराओं का पालन भी पूर्ण शिद्दत से होता दिखाई दे रहा है व इसका नाम भी इसी आधार पर पड़ा। थाई अर्थात् स्वतन्त्र, लैण्ड मतलब भूमि। इस तरह से स्वतन्त्र भूमि थाईलैण्ड कहलाने लगी।

यही स्वतन्त्रता यहां के रहन-सहन, व्यवहार में भी दिखाई दी। स्त्री पुरूष के कार्यो में भी कोई लैंगिक विभेद नहीं दिखाई दिया। शहरों में घूमने पर पाया कि यहां स्त्रियां पूर्णतः आत्मनिर्भर है। छोटी मोटी मजदूरी हो, मालवाहक, गाड़ी चलाना हो, मध्यम

किस्म की दुकानदारी हो या विशाल व्यापारिक कार्य, सभी जगह यहां स्त्रियों का वर्चस्व ही दिखाई दिया। इससे यह बात भी स्पष्ट हुई कि यहां सर्वत्र साक्षरता का ही डंका बज रहा है। ''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात् विद्या विमुक्ति/स्वतन्त्रता प्रदान करती है। यहां स्पष्टतः दृष्टिगोचर हुआ। यहां कामगारों का सुशिक्षित व्यवहार बरबस ही आकर्षित करने वाला रहा। सच ही है धरती पर प्राकृतिक सौंदर्य और मानवीय सदव्यवहार का कहीं कोई सानी नहीं। शायद यही कारण है कि विश्व के पटल पर पर्यटन उद्योग यहां तीव्र गति से फल फूल रहा है।

पर्यटन के दौरान थके शरीर को आराम देने हेतु आवश्यक मालिश यहां मसाज पार्लरों में उपलब्ध है। तरह-तरह के फूलों के अर्क, अनेकानेक जड़ीबूटियों युक्त सुगंधित तेलों से मालिश साथ ही विशिष्ट एक्यूप्रेशर बिन्दुओं पर दबाव द्वारा की जाने वाली मालिश यहां की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। यहां के प्रत्येक शहर में अधिकतम स्थानों पर बड़ी ही सहजता से यह उपलब्ध है। थाईलैण्ड की आर्थिक व्यवस्था में मसाज पार्लर प्रमुख आय स्रोतों में से एक है।

यहां की ग्रामीण महिलाओं ने हस्तकला उद्योग में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है। यहां की महिलाओं ने कृषि कार्य के साथ ही कपास एवं सिल्क की हस्तकला सामग्री व वस्त्र निर्माण कर यहां की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ता प्रदान करने में विशेष भूमिका निर्वाह की है। यहां के हस्तनिर्मित कपास व सिल्क के वस्त्र व्यावसायियों की विशिष्ट मांग रहते हैं। यहां के समाज में महिलाओं की सुदृढ़ स्थिति होने का यह प्रमुख कारक है।

यहां की कानूनी/संवैधानिक व्यवस्थायें भी स्त्री-पुरूष समता व राष्ट्र विकास में सहयोगी भूमिका का निर्वहन करती है। यहां की कानूनी व्यवस्था स्त्रियों के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की पक्षधर है। विवाह रूपी सामाजिक संस्था इन्हें उपनाम को इच्छित बनाए रखने की स्वतन्त्रता देता है। यहां अपने नाम के साथ माता-पिता या माता/पिता के उपनाम जैसी कोई बाध्यता नहीं है जो कि यहां की स्थितियों द्वारा किये जाने वाले कार्यो को सकारात्मक प्रगतिवाद प्रदान करती है।

विश्व के प्रमुख पांच अग्रिम राष्ट्रों में थाई महिलाओं की स्थिति 2016 के शोध आधार पर वरिष्ठ प्रबंधक अधिकारी (**CEO**) के रूप में काफी उच्च स्थान प्राप्त हैं। विश्व में जहां वरिष्ठ प्रबन्धक महिलाऐं कुल 24 प्रतिशत है। यहां थाईलैण्ड जैसे छोटे से राष्ट्र में यह आंकड़ा 37 प्रतिशत है, जो कि विश्व के उद्योग जगत में बड़ी अहमियत रखता है तथा विश्व स्तर पर थाई महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्रदान करता है। यहां के परिवारों व समाज में महिलाओं के निर्णयों की बड़ी अहमियत स्वीकारी

जाती है। परिवार, समाज, शिक्षा, राष्ट्र विकास, आर्थिक विकास जैसे विशिष्ट मुद्दोंपर थाई महिलाओं की अग्रणी भूमिका सदैव प्रथम पायदान पर रहती है। भारतीयों को इससे सीख अवश्य ही लेनी चाहिए।

जहां तक भाषा का प्रश्न है, प्रमुखतः यहां थाई भाषा ही प्रयुक्त होती है। बैंकांक जैसे बड़े शहरों में कहीं-कहीं अंग्रेजी का प्रयोग भी किया जाता है। हिन्दुस्तानियों को भाषागत समस्या आना स्वाभाविक ही है। पर हमारे टूर में गाइड के साथ रहने से यह समस्या भी हमारे लिए विशेष मुसीबत पैदा न कर पाई। गाईड पूरी ताकत लगा ही देती थी हमें समझाने में उसके हावभाव से ही हम काफी कुछ समझ जाते थे। वैसे उनकी थाई भाषा अथवा थाई प्रभावित अंग्रेजी समझ पाना हमारे बस का रोग नहीं था। इसके बावजूद भी हमने पाया कि यहां पर्यटन उद्योग बड़े पैमाने पर फल-फूल रहा है। ऐसा माना जाता है कि थाइलैण्ड में सात पोषित इच्छाओं/आकांक्षाओं की आपूर्ति बड़ी ही सहजता से हो पाती है। सहज उपलब्धता ही यहां कि विशिष्ट विशेषता है। मंदिरों की बहुलता भी इस जगह की प्रमुख विशिष्टता है। हमने अपना भ्रमण कार्य भी यहीं से प्रारम्भ किया :

वाट अरूण (डान का मंदिर) : यह बैंकाक का प्रसिद्ध व अद्‌भुत दर्शनीय स्थल है। इसकी विशिष्ट छटा/आभा सूर्यास्त के समय निराली होती है। यह प्रतिदिन प्रातः 8:30 से सायं 5:00 बजे तक दर्शनार्थियों हेतु खुला रहता है।

 ISSN 2581-9917

वाट बेनचमा बोफिट (संगमरमर मंदिर) : यह यहां की इटेलियन मार्बल से निर्मित बेहद खूबसूरत मंदिर है। यहां भी प्रातः 8:30 से सायं 5:00 बजे तक दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है।

वाट क्रा केऊ (बेशकीमती अनमोल बुद्ध का मंदिर) : यहां के विशिष्ट व बेहद आकर्षक मंदिरों में से एक है। यह काफी बड़े भू-भाग पर भव्य महलनुमा स्वरूप में अवस्थित है। यहां भगवान बुद्ध की भव्य प्रतिमा स्थापित है। यहां मंदिर के परिसर में बेहद खूबसूरत व निराले दृश्य दिखाई पड़ते हैं। मंदिर में स्त्री-पुरुष विशिष्ट वेश-भूषा धारण करके ही प्रवेश करते हैं। जिसमें शरीर के पूरे अंग ढके हुए होते हैं। अंग प्रदर्शित करते वस्त्र यहाँ प्रवेश हेतु मान्य नहीं है। प्रातः 8:30 से दोपहर 3:30 तक ही यह मंदिर दर्शनार्थियों हेतु खुलता है।

वाट फो (शयन मुद्रा में बुद्ध) : यहां भगवान बुद्ध की विशाल मूर्ति है जिसका आकार 46 मीटर लम्बा व 15 मीटर ऊँचा है। यह स्वर्ण मूर्ति शयन मुद्रा में है यह स्थान थाईलैण्ड के रतनकोसिन द्वीप में अवस्थित है। यह प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक श्रद्धालुओं हेतु खुला रहता है। यहां श्रद्धा और भक्ति के साथ ही सुप्रसिद्ध थाई मसाज का आनंद भी लिया जा सकता है व प्रशिक्षण भी प्राप्त किया जा सकता है अर्थात् यहां पारम्परिक थाई मसाज का प्रशिक्षण केन्द्र भी है।

प्रा प्रोम (ब्र् 4) इरवन श्राईन (चतुर्मुखी ब्रह्मा मंदिर) : यहां हिन्दू मान्यताओं के अनुसार सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी की मूर्ति स्थापित है। ब्रह्मा जी के चार मुखी स्वरूप के यहां दर्शन लाभ प्राप्त होते हैं। इसे ताओ महा प्रोम भी कहा जाता है। यहां कि पारम्परिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा जी दयावान, सुकोमल हृदय युक्त, भेदभाव रहित, क्षमा दान करने वाले देवता है। अतः यह स्थान श्रद्धालुओं से हमेशा भरा रहता है जबकि मंदिर के पट प्रातः 8 से सायं 7 बजे तक ही खुलते हैं। यह मन्दिर ग्रांड हयात इरवन होटेल के सामने 1956 में स्थापित हुआ था। पुरातन मान्यताओं के अनुसार यहां सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी चारों दिशाओं में जीवित व भौतिक सृष्टि में सम्मिलित समस्त तत्वों पर नजर रखते हुए है व उनकी रक्षा करते हैं। यहां श्रद्धालु परम्परात स्वरूप में पुष्पहार, 16 अगरबत्तियां, 4 मोमबत्तियां व स्वर्णिम पत्तियों की चादर चढ़ाते हैं।

त्रिमूर्ति श्राईन (ब्रह्मा विष्णु महेश) / त्रिदेव मंदिर : यह सेन्ट्रल शापिंग कॉम्प्लेक्स में स्थापित है जो कि बहुत बड़े भू-भाग पर फैला हुआ है। यहां ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रतिकात्मक तीन खम्बे आस्था का केन्द्र है। यहां की पूजन सामग्री में मुख्यतः लाल रंग के पुष्प, अगरबत्तियां व मोमबत्तियां प्रयुक्त होती हैं। पुरातन मान्यताओंनुसार यहां श्रद्धालु लाल रंग के वस्त्रधारण कर लाल रंग के पुष्प लेकर जाते हैं, अपने जीवन में स्थायी प्रेम की अभिलाषा में।

गणेश श्राईन (गणपति मंदिर) : यह त्रिमूर्ति श्राईन के पास ही स्थापित है। यहां भी इन्हें संकट मोचन व रिद्धी-सिद्धी के दाता स्वरूप में ही स्वीकारा जाता है। कला संस्कृति के दाता विघ्नहर्ता, प्रथम पूज्य स्वरूप में ही स्वीकारा जाता है। ताजे पुष्प, पुष्पहार, केले, गन्ने व गन्ने का रस भोग स्वरूप चढ़ाये जाते हैं।

गोडेस लक्ष्मी स्टेच्यू (लक्ष्मी मंदिर) : यह मंदिर गोर्सोन प्लाजा की चौथी मंजिल पर स्थापित है। लक्ष्मी जी को विष्णुप्रिया पत्नी धन की अधिष्ठात्री देवी स्वरूप में ही पूजा जाता है। सिक्के, कमल पुष्प, गन्ने व गन्ने का रस चढ़ाया जाता है। बैंकाक में राचा प्रासोंग जंक्शन हिन्दु धर्म का प्रमुख धार्मिक केन्द्र हैं, जहां हिन्दु देवताओं के मंदिरों के मध्य एकमात्र दैवी मंदिर यह लक्ष्मी मंदिर ही है।

नारायण स्टेच्यू (नारायण मंदिर) : यह मंदिर इंटरकोन्टिनेन्टल होटेल के सामने स्थित है। पुरातन मान्यताओं स्वरूप नारायण भगवान भक्तों के व्यवसाय को कुदृष्टि व बुरी आत्माओं के प्रकोप से सुरक्षित रखते हैं व भक्तों के प्रति दया दृष्टि रखते हैं। यहां भक्त पीले रंग के पुष्प, यथा गेंदे के पुष्पहार, थाई मिठाई व स्थानीय वस्त्र चढ़ाते हैं।

इन्द्र स्टेच्यू (इन्द्र देवता) : इन्द्रदेव का यह मंदिर एमरिन प्लाजा में स्थित है। यहां इन्द्र देवता बौद्ध धर्म के संरक्षक स्वरूप में मान्य है व सांसारिक अच्छाईयों के व देखभाल करने वाले स्वरूप में पूजनीय है। हाथी आपका प्रिय वाहन है। यहां छोटे हाथी स्वरूपा पुष्प/पदार्थ व गेंदे के पुष्पहार चढ़ाए जाते हैं। यहां 2013 में बेहद खूबसूरत तांबे की मूर्ति (इन्द्र देवता) प्रतिष्ठापित की गई है।

मंदिरों के दर्शन पश्चात् हमने यहां के महलों की तरफ कदम बढ़ाए।

रॉयल पैलेस (भव्य महल) : यहां दो प्रकार के भव्य महल हैं। (1) द ग्रेंड पैलेस (2) विमानमेक पैलेस

(1) द ग्रेंड पैलेस : यह बैंकॉक के मध्य में फ्रानाकोन डिस्ट्रिक्ट में मौजूद है। 1700 ईस्वी से यह स्थान सियाम के राजाओं का राजगृह (राजमहल) रहा है। इसकी बनावट बेहद भव्य, आकर्षक व शानदार है। यह सवेरे 8:30 बजे से 3:30 बजे तक पर्यटकों हेतु उपलब्ध रहता है। यहां निरंतर पर्यटकों का तांता लगा रहता है। यहां प्रवेश हेतु स्त्री पुरूष को यथोचित परिधान धारण करना अनिवार्य है। गरिमामय परिधान के बगैर यहां प्रवेश निषेध है।

(2) विमानमेक पैलेस (बादलों में महल) : यह दूसित पैलेस कॉम्प्लेक्स में स्थित है यह भव्य महल गोल्डन टीक लकड़ी से निर्मित हैं। अनूठी बात यह है कि यहां निर्माण के दौरान एक भी कील का प्रयोग नहीं हुआ है। इस महल में अनेकों आकर्षक व

दुर्लभ वस्तुओं का भण्डार है जो इसके सौंदर्य को द्विगुणित कर देता है। प्रातः 8:30 बजे से दोपहर 4:30 बजे तक यहां पर्यटकों की आवा-जाही बनी रहती है।

म्यूजियम : यह एशिया के बड़े भव्य समृद्ध म्यूजियमों में से है। यह सनम लुआंग के आगे नाफ्रशाट रोड पर मौजूद हैं। यहां थाई संस्कृति को प्रदर्शित करते दृश्य, कलाकृतियां, वस्तुएं प्रदर्शित की गई है। सवेरे 9 बजे से सायं 4 बजे तक खुला रहता है व सोमवार एवं मंगलवार सहित सार्वजनिक अवकाशों पर बंद रहता है। यहां अनेकों कलाकृतियां हैं जो बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक महत्व को प्रदर्शित करती है जिससे मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रहा जा सकता।

वैसे तो म्यूजियम की क्या कहूं वहां की साफ-सुथरी सड़कों का सौन्दर्य, वहां का सुव्यवस्थित ट्रैफिक, चौराहों पर ट्रैफिक पुलिस को मुस्तैदी से खड़े यातायात नियंत्रित करने हेतु उपलब्ध सुविधाऐं सभी कुछ मुग्ध कर ही रही थीं। चौराहों पर ही सड़क के किनारों पर ट्रैफिक पुलिस के विश्राम काल में विश्राम हेतु दो-दो कुर्सियां जिन पर यथोचित शेड लगा हुआ था, दिखाई पड़ीं। समझ में आया कि मानवीय संसाधनों का सदुपयोग भौतिक संसाधनों की आपूर्ति व व्यवस्थाओं पर भी निर्भर है।

बैंकॉक की सड़कों पर एक साथ एक दूसरे के ऊपर नीचे 7-8 पुलों को भी देखा। राहगीर आपनी दिशानुसार बड़ी सहजता से भीड़-भाड़ वाले इलाकों में चलते दिखाई दिये। सड़क जाम की संभावनाएं ही यहां दम तोड़ती नजर आई। नगर निगम की सूझ-बूझ व कार्यप्रणाली को सादरनमन।

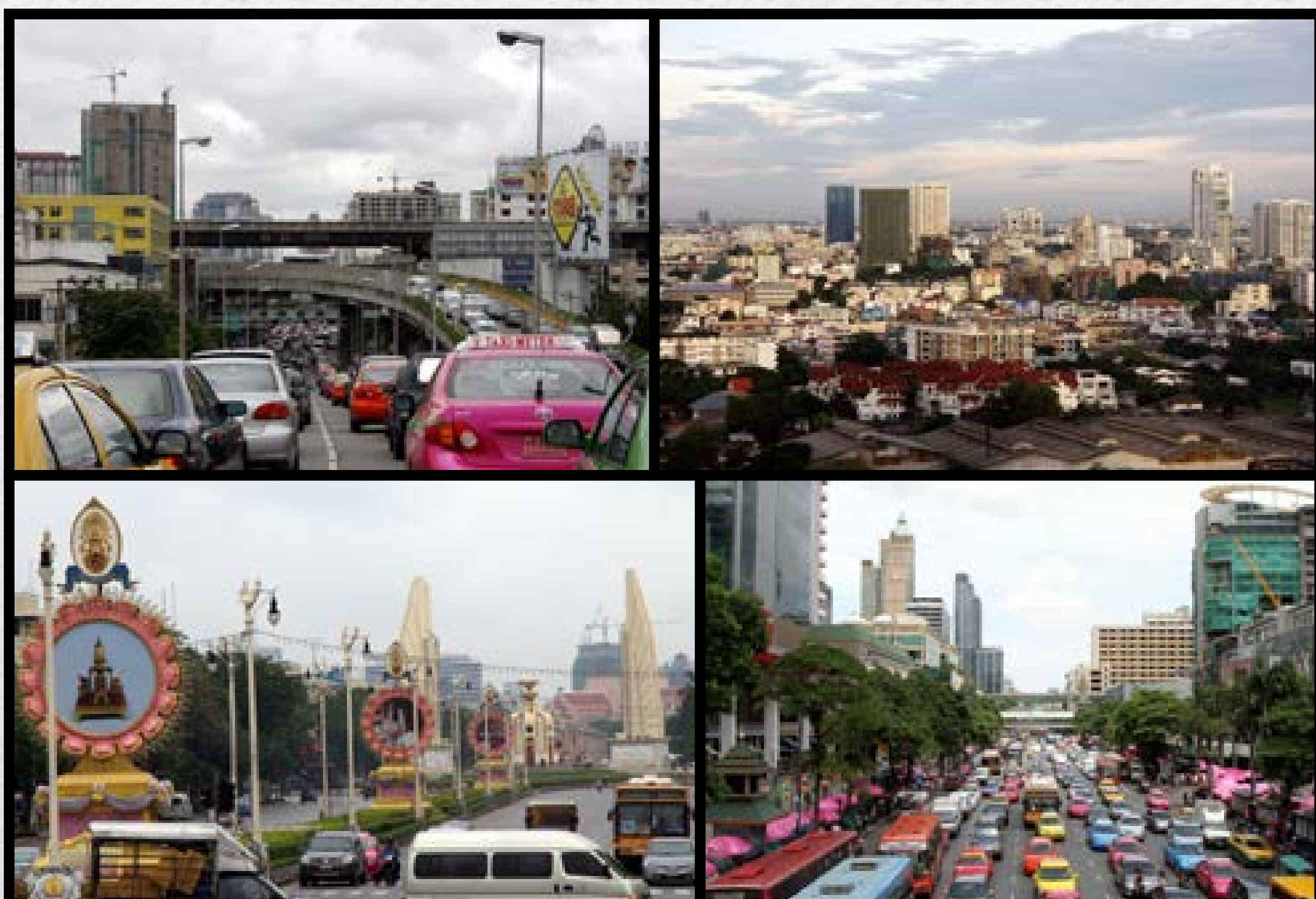

 ISSN 2581-9917

हमें यहां प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर क्षेत्र फुकेट भ्रमण का अवसर भी प्राप्त हुआ। यह दक्षिणी थाईलैण्ड क्षेत्र अंडमान सागर में एक मुख्य दीप और कुछ अन्य द्वीपों के समूह का संगठित प्रान्त है। यहां मुख्यतः करोन बीच, पटोंग व फैंटा सी देखने लायक जगह है। बैंकाक से थाईलैण्ड के दक्षिणी सिरे पर स्थित फुकेट की दूरी करीब 860 किमी. है जहां विमान द्वारा हम पहुंचे।

वैसे यहां के समुद्री तट विश्व स्तरीय सौन्दर्य से घनीभूत है। सफेद मिट्टी, लम्बे लम्बे पाम ट्री, उफनता समुद्र व प्यारा सा शहर सभी कुछ सुन्दर, लुभावना, व रोमांटिक सा नजर आता है। समुद्री किनारों पर खेले जाने वाले अधिकतम खेल यहां उपलब्ध हैं। पाम ट्री के बीच से पहाड़ी धुंधलके के मध्य खूबसूरत सी समुद्री लहरों से अठखेलियाँ करता, सूर्यास्त का दृश्य बड़ा ही मनोरम सा लगता है। मचलती समुद्री लहरों के साथ समय का पता ही नहीं चलता। समुद्र से बाहर श्वेत सी मिट्टी झाड़ते वक्त शारीरिक टूटन अवश्य समय देखने को मजबूर करती है। पर तुरन्त ही सड़क किनारे लगी मसाज पार्लरों की कतारें बरबस ही आकर्षित कर सारी थकान घण्टे भर में ही दूर कर देती है। इसके बाद परदेश में अपने घर की रसोई सी सोंधी-सोंधी खुशबू वाला भोजन मिल जाना सोने पे सुहागा सा नजर आता है, जो आयोजकों की मेहरबानी से ही सहज संभव हो जाता था।

अगले दिन फुकेट से विमान द्वारा हम क्राबी आइलैण्ड पहुंचे। यहां के प्राकृतिक नजारे भी बड़े मनमोहक थे प्राकृतिक हरितिमा यों लगती है मानों साक्षात ईश्वर ने अपने हाथों में कूची ले उकेरा हो उसे। पत्तियों की मोटाई आकार, रंग, घनापन सब कुछ अप्रतिम खूबसूरती लिए हुए। नेत्र अपलक निहारते ही रहते हैं। समय कब पंख लगाए उड़ जाता पता ही नहीं चलता।

टैक्सी स्टेण्ड के पास ही सड़क के किनारे बना बड़ा सारा शतरंज बरबस ही आकर्षित कर गया। आहा ...छूकर देखा ...अरे यह तो प्लास्टिक का बना है राजा, रानी, सिपाही ...सभी कुछ श्वेत श्याम रंगों से निर्मित। इंतजार के दौरान जिसे आसानी से खेला जा सके। दिमागी कसरत भी सहजता से हो और निरर्थक इंतजार में व्यतीत होने वाले समय का सार्थक सदुपयोग भी हो जाए वाह क्या बात है। रात्रि भोजन के समय ही अगले दिन जल्दी जागने हेतु चेतावनी प्रदान कर दी गई थी। कारण कि प्रकृति के अनूठे नजारे फी फी आइलैण्ड का लुत्फ जो उठाना था हमें। प्रातः 7:30 बजे होटल से बस द्वारा समुद्री तट तक पहुंचना जो था।

फी फी आइलैण्ड छः प्रमुख द्वीपों का एक निराला समूह है। इसमें आकार के दृष्टिकोण से बड़े द्वीप को फी फी डॉन कहा जाता है। इसका आकार लगभग 9.73 किमी है। यहां तक पहुंचने हेतु चार मंजिला व लगभग 450 सवारियों की बैठक व्यवस्था वाला क्रूज प्रातः 8:30 बजे समुद्र तट से रवाना हो गया था। क्राबी में मराईन रीक्रियेशनल एक्टीविटीज, समुद्री खेल यहां सर्वाधिक उपलब्ध है। खूबसूरत बीच व दूर-दूर तक अथाह समुद्री लहरें साफ सुथरा पानी कहीं शुद्ध हरे तो कहीं नीले रंग का सा आभास। क्रूज का यहां अंतिम पड़ाव था क्रूज आगे नहीं जा सकता। अतः हमें यहां उतरना ही था। वैसे क्रूज पर बैठते ही आत्मीय व्यवहार मिला था, स्वागत सत्कार मिला था। आरामदायक सीटें बाहरी किनारों में समुद्री नीले पानी को आसमां छूते हुए निहारना। क्रूज के पीछे लम्बी-चौड़ी श्वेत मखमली चादर का अठखेलियां करते हुए दौड़ना, सभी कुछ तो आह्लादित कर रहा था दैनिक जीवन की नियमित रोजी-रोटी की तलाश वाली आपाधापी भरी दिनचर्या से दूर निष्णांत समुद्र निहारना... बड़ा ही रोमांचित कर रहा था।

को फी फी डान द्वीप पर उतरते ही कुछ ही पलों में अन्य नन्हीं-नन्हीं स्पीड बोट किनारे आ लगी। क्रूज के समस्त यात्रियों को यहां अपने अपने गाइड के निर्देशानुसार उनमें अपना स्थान ग्रहण करना था। फिर हम उन स्पीड बोट में चढ़ हिन्द महासागर के खूबसूरत द्वीप समूह की सैर को निकल पड़े। यहां चहुं ओर समुंद/समुद्र/समन्दर को प्रकृति ने सुन्दर-सुन्दर अट्टालिकाओं समुद्री झाग सी सुन्दर चट्टानों से सजाया हुआ था। कभी लगता यहां समुद्र के गले में खूबसूरत सी मणियों की माला पिरोई हुई है। साफ सुथरा पारदर्शी जल आत्मिक सा साफ सुथरी सी झलक दे रहा था जिसने शरीर रूपी चोला पहनते ही कितनी गंदगी जमा कर ली है। ठीक यही निष्च्छल आत्मा सा समुद्र समाज व सामाजिक व्यवस्थाओं से दूर होने पर कितना निर्मल कोमल लग रहा है। जहां अगले पल का कोई इंतजार नहीं कोई भरोसा नहीं समय का, कब यहां अपनी उल्टी चादर ओढ़ ले। यहा कभी-कभी डर

भी लगता था। (अकाल्पनिक मौत का) फिर हमारी बोट आकार के आधार पर दूसरे बड़े द्वीप को फी फी ले पर आकर रुकी। यह लगभग 2 किमी तक फैला हुआ है। यहां बच्चों युवाओं और चिरयुवाओं ने समुद्री ऐतिहातन वस्त्र (लाईफ जैकेट) पहन समुद्र में छलांगे लगाई। शेष बोट पर खड़े अपने परिजनों को समुद्र में मछलियों सी अठखेलियां करते निहारने लगे। कुछ माएँ ईश स्मरण में जुट गई अपने परिजनों की सुरक्षा की अपेक्षा में। हमने देखा कुछ महिलाऐं नाव पर बैठे-बैठे हाथ जोड़ आंखें बंद कर अपने अपने ईष्ट को याद कर मंत्रोच्चारण कर रही थीं। कभी-कभी समुद्र की भयावहता भी भीतर ही भीतर भय का कारण बन रही थी। जहां नन्हें-नन्हें बालक समुद्र में छलांग लगाने को मचल रहे थे वहीं एक बालिका अपने पिता को समुद्र में छलाँग लगाते देख सिहर उठी और जोर-जोर से रोने चीखने चिल्लाने लगी उसके पिता के वापस बोट पर लौटकर आने तक उस मासूम कली का भयाक्रांत हो रोना-चीखना जारी रहा। पिता के गले लगने पर ही उसके आंसू थमें व रुकी हुई साँसे सामान्य हो पाई।

बोट पर से ही हमने अन्य प्रमुख द्वीपों बिडा नोक, बिडा नोई, बेम्बू आइलैण्ड, जिसे को मेई फेई भी कहा जाता है, व को यंग की खूबसूरती को निहारा, सभी कुछ फिल्मी परिदृश्य सा नजर आ रहा था और सच भी है हमारी हालीवुड, बॉलीवुड की बहुत-सी फिल्मों में यहां के खूबसूरत दृश्यों का फिल्मांकन भी किया गया है। प्रकृति की अप्रतिम सुन्दरता को फिल्मी परदे से पृथक् वास्तविक स्वरूप में देखना एक एक पल को उस प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य जीना बड़ा ही रोमांचकारी सा महसूस हो रहा था। समुद्र में इनके अलावा भी और छोटे-छोटे टापुनुमा द्वीप भी है। समुद्रीउतार चढाव के अन्जाने भय ने हमें वहां न पहुंचने दिया वैसे तो बिडा नोई, बिडा नोक को मेई फेई, को यंग पर भी आवास प्रवास की कोई व्यवस्था नहीं है। यहां जाना हो तो टेन्ट आदि की व्यवस्था भी स्वयं को ही करनी होती है।

प्राकृतिक आपदा सुनामी ने यहां के जन जीवन पर करारा प्रहार किया था पर उसके बाद भी यहां का सौंदर्य व आम जन जीवन बड़ा ही मनोहारी है। 2013 की जनगणना के अनुसार क्राबी की जनसंख्या मात्र 2500 है। प्रकृति ने यहां मात्र दो मौसम ही नवाजे हैं। मई से दिसम्बर तक वर्षा ऋतु व जनवरी से अप्रैल तक ग्रीष्म ऋतु छाई रहती है। जुलाई सर्वाधिक नमी वाला माह रहता है तो फरवरी शुष्क माह के रूप में जाना जाता है। सम्पूर्ण फी फी थाईलैण्ड का आकार भी मात्र 12.25 किमी ही है। पर हां, यहां के सौंदर्य को मापा नहीं जा सकता। यह द्वीप समूह अंडमान समुद्र का हीरा भी कहा जाता है। फिल्मांकन के दृष्टिकोण से भी यह सुपरस्टार के रूप में जाना जाता है।

क्राबी ऊष्ण कटिबंधीय समुद्र तट दक्षिण का सबसे बड़ा व स्वर्ग सा सुन्दर है। यहाँ पारदर्शी क्रिस्टल सा पानी व श्वेत कोमल सी रेत साथ ही साहसिक समुद्री खेल विशिष्ट व अनूठा रोमांच सा पैदा करते हैं जीवन में। सितम्बर-अक्टूबर माह को छोड़ जब भी चाहे यहां पहुचें आनंद ही आनंद है। सितम्बर-अक्टूबर में वर्षा की अधिकता की वजह से प्राकृतिक सौंदर्य द्विगुणित भले ही हो जाता है, मगर घर से दूर सैलानी बन पर्यटन का आनन्द नहीं लिया जा पाता है।

समुद्री तटों सुन्दर-सुन्दर द्वीप समूहों के अलावा थाइलैण्ड में सफारी वर्ल्ड जू व पार्क भी यहां प्रमुख आकर्षण केन्द्र हैं। यह 1988 में निर्मित हुआ था और इसे दो भागों में बांटकर विकसित किया गया है। बहुत बड़े भू-भाग लगभग 480 एकड़ भूमि पर जानवरों के स्वतन्त्रता पूर्वक निर्वाह हेतु स्थान दिया गया है। 180 एकड़ भू-भाग विभिन्न किस्म के पंछियों हेतु रखा गया है। जहां दुनिया के अधिकतम स्वस्थ जानवर व पंछी रखे गए हैं। उनके रहने व खाने-पीने, स्वास्थ्य की यहां विश्वस्तरीय बेहतरीन व्यवस्थायें हैं। समुद्री जीवों हेतु भी यहां विशिष्ट स्थान व समुचित व्यवस्थायें हैं। इसके अलावा यहां विभिन्न जीव-जन्तुओं, जंगली जन-जीवन पर आधारित अनेकों कार्यक्रम भी नियमित व निरंतर किए जाते हैं, जिन्हें बैठकर आराम से देखने की भी स्थायी व्यवस्थायें हैं। बड़ी मेहनत व संवेदनशीलता के साथ ये कार्यक्रम तैयार किये जाते हैं। प्रस्तुति के वक्त जिसका सहज ही एहसास किया जा सकता है। यहां अनेकों भोज्य सामग्री व दुर्लभ ऐतिहासिक उपहार सामग्री की दुकानें हैं। यहां जानवर स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण करते हैं। अतः पर्यटक बंद गाडियों में इन जानवरों के स्वतन्त्र विचरण का आनन्द उठा सकते हैं।

यही कुछ विशिष्ट कारण हैं जो इसे विश्व प्रसिद्ध बनाते हैं। इसे देखने में सुबह से शाम कब हो जाती है। पता ही नहीं चलता। पर्यटकों को इस स्थान के भ्रमण हेतु पूरा एक दिन सुरक्षित रखना होता है। विभिन्न दुर्लभ प्रजातियों के जंतु जानवरों पंछियों, समुद्री जीवों को एक साथ विशिष्ट करतब करते देखना वास्तव में एक विशिष्ट अनूठा अनुभव है जो यहां सहज प्राप्य है। यहां का प्रवेश द्वार भी बेहद आकर्षक व कलात्मक दृष्टिकोण से समृद्ध है। यहां पर्यटकों हेतु समय 10 बजे से 4 बजे तक का रहता है। दोपहर के भोज की व्यवस्था सामान्यतः यहां टूर व्यवस्थापकों द्वारा ही की जाती है। यहां के समस्त शो अपने सुनिश्चित समय पर ही प्रारम्भ व समाप्त होते हैं। इनकी समयबद्धता काबिले तारीफ है।

यहां सी लायन शो एवं डॉल्फिन शो सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसके अलावा भी आरंग उतन जिराफ फीडिंग, पंछी शो, व जंगल में निवास करने वाले मानव जीवन पर आधारित काऊ बॉय शो भी बच्चों को बेहद पसंद आते हैं। अपने प्रिय पशु को चुम्बन देते हुए फोटो खिंचवना यहां आम है। साथ ही शेर के शावक को बोतल से गोद में बिठाकर दूध पिलाते हुए फोटो खिंचवाना भी आम प्रचलन में है इसके लिए सामान्यतः 400-500 बाथ (थाई मुद्रा) शुल्क अतिरिक्त लिया जाता है। रंगीन पंछियों व वहां थोड़ी-थोड़ी दूरी पर निर्मित विशिष्ट कलाकृतियों को निहारना व उन्हें अपने कैमरे में कैद करना विशिष्ट शगल रहता है पर्यटकों का। यहां होने वाला मंकी शो भी बड़ा लुभावना व मजेदार होता है।

सफेद शेर जिसका कि सिर्फ नाम ही सुना था यहां स्वतन्त्र रूप से विचरण करते देखना रोमांच पैदा करने वाला रहा। वैसे इस शानदार स्थान के समस्त प्राणी आकर्षक देह यष्टि के साथ पूर्णतः स्वस्थ नजर आए। जो कि यहां के प्राणियों की उचित देखभाल व समुचित आहार व तापमान की स्थिति को दर्शाता है। यहां के कार्यक्रम में पंछियों का अनुशासित व्यवहार भी काबिले तारीफ रहा। इन्हें अपेक्षित व्यवहार, क्रियाओं हेतु तैयार करना कितना जूनूनी रहा होगा। कुछ-कुछ अकल्पनीय सा लग रहा है। आयोजकों की सोच योजना, क्रियान्विति में लगी मेहनत का अंदाजा लगाना भी मुश्किल सा हो रहा था। हम सभी दर्शक इससे अभिभूत हुए बिना नहीं रह सके।

ISSN 2581-9917

यहां का प्रत्येक शो अपने आप में अनूठा सा था। फिर चाहे उसमें कुत्ता, बिल्ली, मुर्गी, चिड़िया, मोर, शेर, सियार, जिराफ, बंदर, भालू, हाथी कोई सा भी घरेलु या जंगली प्राणी क्यों ना हो। कार्यक्रम बहुत बेहतरीन थे। मात्र ऐसा ही नहीं वरन् उन कार्यक्रमों को तैयार करने में कितनी मेहनत लगी होगी? यह वाक्य भी हर दर्शक की जुबां पर था। आज भी उन दृश्यों को याद करते हैं तो एक रोमांचकारी अनुभव सहज ही नेत्रों के आगे अठखेलियाँ करने लगता है।

वास्तव में थाई मनोरंजन का कहीं कोई मुकाबला ही नहीं। इसमें प्राकृतिक ही नहीं सामाजिक कसीदाकारी भी शामिल है।

थाईलैण्ड में क्राबी, फुकेट के अलावा पटाया भी बेहद खूबसूरत व आनन्ददायी जगह हैं। हालांकि हमारे समूह के कुछ ही सदस्य वहां पहुंच पाए थे। बैंकाक से लगभग 170 किमी दूर थाइलैण्ड की खाडी के पूर्वी तट पर पटाया है। पिछली सदी के साठ के दशक में यह महज मछुआरों का एक गाँव हुआ करता था। अप्रैल 1961 में वियतनाम के खिलाफ अमेरिकी जंग में हिस्सा लेने वाले लगभग सौ सैनिकों का जत्था यहां आराम करने के लिए आया था। तभी से यह पर्यटन स्थल के रूप में अपनी धाक जमाने लगा। अब फुकेट की ही तरह यह भी दक्षिण पूर्वी एशिया के सबसे पसंदीदा पर्यटन स्थलों में से एक है। एक अनुमान के अनुसार यहां हर साल पांच लाख के लगभग पर्यटक आते हैं।

बचपन से घर पर अक्सर पापा-मम्मी से, शिक्षकों से सुना था कि जब बच्चे पढ़ाई लिखाई छोड़ इधर-उधर भटकने लग जाते थे वे डांटते हुए बोलते थे ...पढ़ाई में मन लगता नहीं बार-बार तफरीह मारने बाहर पहुंच जाते हो। यह तफरीह मारना शब्द का सीधा सादा अर्थ यहां पहुंचने पर समझ आया। वास्तव में यहां पर्यटकों को मस्ती भरी काल्पनिक दुनिया वास्तविकता में उपलब्ध होती है। पटाया हर किस्म के पर्यटक हेतु जन्नत है। वैसे तो पूरा थाइलैण्ड ही विशिष्ट अनुभूतियों से भरा स्वर्ग का सा अहसास करवाता है। किंतु पटाया वह जगह है जहां सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक मात्र ही नहीं पूरी रात का मनोरंजन अथाह मस्ती मौजूद है। हाथी की सवारी हो, ऑटोमैटिक मिनी बाईक या भारी भरकम क्रूज बाइक या फिर बहुरंगी कनवर्टिबल जीपों पर हाथ आजमा सकते हैं। हवाई खेलों व पानी से जुड़ी तमाम गतिविधियों के साथ आकाश से पाताल तक का रूहानी मनोरंजक सफर यहां किया जा सकता है। कुछ ऐसा ना भी करना चाहें तो यहां प्रकृति के करीब रहस्यमयी अलौकिक आनन्द प्राप्त करना भी सहज ही है।

यहां की रात्रिकालीन जीवनशैली सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इतनी प्रसिद्ध कि प्राकृतिक अकूट सौन्दर्य उसके सामने गौण हो जाता है। शायद उसके पीछे कानूनी मान्यता होना, उसे वैध मनोरंजन में सम्मिलित होना अधिक सशक्त प्रसिद्धि दिलवा पाता है जो कि अन्य देशों के साथ ही हिन्दुस्तान में भी चोरी छिपे, गैर कानूनी स्वरूप में डरते-छिपते ही उपलब्ध हो पाता है। यहां अन्य मनोरंजक क्रीड़ाओं के समान ही यौन क्रीडाएं भी सहज व कानूनी मान्य स्वरूप में उपलब्ध है। जो कि यौन पिपासु स्त्री-पुरूषों को सहज आसान एवं समान अवसर प्रदान करवा जाती है। यही इसके नामी/बदनामी होने का प्रमुख कारकों में से एक है। यह जादू है या नशा पता नहीं मगर पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य तत्व अवश्य है।

यौन क्रीड़ा व्यापार यहां के पर्यटन उद्योग का एक सुदृढ़ आर्थिक स्तम्भ है। जिसे अन्य बाजार/व्यापार के समान ही स्वीकरण प्राप्त है। इसे हमारे हिन्दुस्तान में सहज स्वीकार्य नहीं माना गया है। शायद इसी कारण कुछ विशिष्ट लोग इसे विशिष्ट स्वरूप में स्वीकार यहां आने को लालायित रहते हैं। थाइलैण्ड की अनेकानेक विशेषताऐं हैं जो इस विशिष्ट विशेषता के आगे आम लोगों को दिखाई भी नहीं देती। मैं यहां ईश्वर का धन्यवाद देना चाहूंगी कि उसने मुझे सही दिशा दृष्टि प्रदान की और मैं थाइलैण्ड को उसके वास्तविक स्वरूप के साथ देख पाई।

यहां की प्राकृतिक खूबसूरती, सुरम्य वातावरण को साथ ले हम पुनः सुवर्ण भूमि हवाई अड्डा से हवाई यात्रा द्वारा हिन्दुस्तान लौट आए। वहां का सामाजिक व्यवहार, परिधान, आध्यात्मिक स्वरूप हमें अपनी जड़ों की तरफ इशारा करता प्रतीत हुआ, जिसे हम पश्चिमी बयार के चलते दिनोंदिन भुलाते जा रहे हैं।

दिल्ली हवाई अड्डे पर उतरने के बाद हमने अपने सहयात्रियों से भाव भीनी विदाई ली फिर यहाँ से हम अपने-अपने गंतव्य की ओर पृथक्-पृथक् चल पड़े।

धन्य थाई भूमि।

❖❖❖❖

सभी चित्र डॉ. पीयूष जैन के सौजन्य से